

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 7, चुनाव व्यवस्थित सूत्रीकरण, संख्या 2

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 7, चुनाव प्रणालीगत सूत्रीकरण, संख्या 2 है।

हम पवित्र शास्त्र में उद्धार के सिद्धांत का अध्ययन कर रहे हैं, विशेष रूप से अब चुनाव के सिद्धांत का।

हम अभी भी चुनाव के समय का अनुसरण कर रहे हैं, यह तथ्य कि यह सृष्टि से पहले है। 2 तीमुथियुस 1:9 भी सृष्टि से पहले चुनाव की बात करता है। परमेश्वर ने हमें हमारे कामों के अनुसार नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार बचाया, जो समय की शुरुआत से पहले मसीह यीशु में हमें दिया गया था।

परमेश्वर ने समय से पहले ही हमें बचाने का अनुग्रह दिया, अर्थात्, अनंत काल में, तथाकथित। एक बार फिर, एक पूर्व-अस्थायी चुनाव हमारे विश्वास से पहले होता है। दो बार, प्रकाशितवाक्य में उन लोगों के बारे में बताया गया है जो जानवर का अनुसरण करते हैं यदि उनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं हैं, उद्धारण, दुनिया की नींव से।

प्रकाशितवाक्य 13:8, पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोग पशु की पूजा करेंगे। वे सभी लोग जिनका नाम दुनिया की नींव से लेकर बलि किए गए मेमने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा गया था। उन शब्दों को कहने के अलग-अलग तरीके हैं, और मैं इसे अभी के लिए ऐसे ही छोड़ देता हूँ।

जानवर, प्रकाशितवाक्य 17:8, वह जानवर जिसे तुमने देखा, वह था और नहीं है और अथाह कुण्ड से निकलकर विनाश में जाने वाला है। वे लोग जो पृथ्वी पर रहते हैं, जिनके नाम दुनिया की नींव से लेकर अब तक जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, वे उस जानवर को देखकर चकित हो जाएंगे जो था और नहीं है और आने वाला है। जीवन की पुस्तक में अपना नाम दर्ज कराने का मतलब है परमेश्वर के नगर में नामांकित होना, जबकि किसी का नाम छूट जाने का मतलब है नामांकित न होना।

निहितार्थ से, सकारात्मक, नकारात्मक की तरह, दुनिया की नींव से है, यानी सृष्टि से। तथ्य यह है कि केवल परमेश्वर ही चुनाव करता है और सृष्टि से पहले ऐसा करता है, इसका मतलब है कि चुनाव और उसके बाद का उद्धार सब उसके द्वारा है, न कि पहले से देखे गए मानवीय विश्वास या कर्मों पर आधारित है। जब हम चुनाव के आधार के बारे में पूछताछ करते हैं तो हमें यही पता चलता है।

चुनाव का आधार, परमेश्वर का प्रेम और इच्छा। पवित्रशास्त्र लगातार चुनाव का आधार परमेश्वर में बताता है, हम में नहीं। विशेष रूप से, यह परमेश्वर की इच्छा और प्रेम को चुनाव के आधार के रूप में प्रस्तुत करता है।

पुराने नियम में बताया गया है कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों में से इस्राएल को क्यों चुना। इस कारण से केवल इस्राएल ही परमेश्वर का है। व्यवस्थाविवरण 7:6-8 में कहा गया है कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में से तुम्हें अपना निज भाग होने के लिए चुना है।

यहोवा ने तुम पर अपना दिल लगाया और तुम्हें चुना, इसलिए नहीं कि तुम सभी लोगों से ज्यादा संख्या में थे, क्योंकि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे, बल्कि इसलिए कि यहोवा तुमसे प्यार करता था और उसने तुम्हारे पूर्वजों से की गई शपथ को पूरा किया। व्यवस्थाविवरण 7:6-8 मैं माफ़ी चाहता हूँ, मैंने पहले गलत कहा था कि यह व्यवस्थाविवरण 5 में था। हाँ, वे सभी लोगों में सबसे कम थे। वे एक आदमी और उसकी पत्नी थे जो बच्चों के जन्म के मामले में लगभग मर चुके थे, अब्राहम और सारा।

इस्राएल के चयन के पीछे परमेश्वर की इच्छा और प्रेम निहित था। परमेश्वर ने इस्राएल को इसलिए नहीं चुना क्योंकि उसने पहले से ही देख लिया था कि इस्राएल विश्वास और आज्ञाकारिता का पालन करेगा। क्योंकि वह बार-बार इस्राएलियों को एक हठीले लोगों के रूप में चित्रित करता है।

निर्गमन 32:9 33:3 और 5, 34:9 व्यवस्थाविवरण 9:6 और व्यवस्थाविवरण 13:10, 16 31, 27 एक बार फिर। निर्गमन 32:9 33:3 33:5 34:9 व्यवस्थाविवरण 9:6 और 13:10, 16 31, 27 ओह, नहेमायाह 9:16 और 17 भी। स्टीफन अपने समकालीनों के साथ-साथ अपने पूर्वजों के बारे में भी बात करता है।

उद्धरण, तुम हठीले लोगों, जिनके दिल और कान खतनारहित हैं। खतनारहित कान? तुम हमेशा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो, जैसा कि तुम्हारे पूर्वजों ने किया था। प्रेरितों के काम 7:51 पॉल ईसाइयों के चुनाव के बारे में शास्त्र का सबसे विपुल शिक्षक है।

और वह इसका आधार परमेश्वर के प्रेम और इच्छा में बताता है। तीन उदाहरण पर्याप्त होंगे। सबसे पहले, इफिसियों 1 में हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने हमें प्रेम में चुना है।

उसने हमें यीशु मसीह के द्वारा अपने पुत्रों के रूप में गोद लेने के लिए पहले से ही नियत कर लिया है। उसकी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार, उसके गौरवशाली अनुग्रह की स्तुति के लिए। इफिसियों 1 में विवरण देखने से पहले, हमें इफिसियों 1 को देखना चाहिए। तीन महान चुनाव अंश हमारे ध्यान के योग्य हैं, इससे पहले कि हम उनसे धर्मशास्त्र निकालें।

इफिसियों 1:3-14 यूनानी भाषा में एक बड़ा वाक्य है। मैंने कई साल पहले हरमन रिडरबोस से एक किताब में पढ़ा था, जो मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पॉल, उनके धर्मशास्त्र की एक रूपरेखा।

इस महान अंश को तीन भागों में विभाजित करें। पूर्वसर्गीय छंद के अनुसार, पद 6, उसकी महिमामय कृपा की स्तुति के लिए। पद 12, अंत में, उसकी महिमा की स्तुति के लिए।

और इस अनुच्छेद के अंत में, उसकी महिमा की प्रशंसा की गई है। अगर हम ऐसा करते हैं, तो हमारे पास तीन पैराग्राफ होंगे, और मैं उन्हें पैराग्राफ कहूंगा। पहला पैराग्राफ परमेश्वर पिता के कार्य पर प्रकाश डालता है।

दूसरा, पुत्र, एकमात्र स्थान है जहाँ छुटकारे का उल्लेख किया गया है। तीसरा एकमात्र स्थान है जहाँ पवित्र आत्मा का उल्लेख किया गया है। पिता, श्लोक 1:6।

बेटा, 7:12. पवित्र आत्मा, 13:14. इतना ही नहीं, बल्कि पौलुस तीन त्रित्ववादी व्यक्तियों में से प्रत्येक को उद्धार के कार्य सौंपता है।

पिता का कार्य चुनाव है, जिसे पद 11 में फिर से दोहराया गया है। पुत्र का कार्य उसके लहू के द्वारा छुटकारा है, जो उस मध्य अनुच्छेद में है। और पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को मुहर लगाने में पिता का प्रतिनिधि है।

वह मुहर है, पवित्र आत्मा मुहर लगाने वाला नहीं है। पिता मुहर लगाने वाला है, जो पुत्र में हमारी एकता को मुहर लगाता है। और हमें जो मुहर दी गई है वह पवित्र आत्मा है।

पिता, पुत्र, आत्मा, चुनाव या पूर्वनियति, मुक्ति, मुहरबंदी। इस ढांचे के भीतर, हम अन्य बातों के अलावा, त्रित्ववादी सामंजस्य देखते हैं। पिता एक लोगों को चुनता है, और पुत्र एक लोगों को मुक्ति दिलाता है।

पिता उन्हीं लोगों पर परमेश्वर की पवित्र आत्मा की मुहर लगाता है जो विश्वास करते हैं। वापस अपने नोट्स पर, वापस अपने व्याख्यान सामग्री पर। इफिसियों 1 में, हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने हमें चुना है।

प्रेम में, उसने हमें यीशु मसीह के द्वारा अपने लिए पुत्रों के रूप में गोद लेने के लिए पूर्वनिर्धारित किया, उसकी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार, उसके गौरवशाली अनुग्रह की स्तुति के लिए। कुछ आयतों के बाद, वह कहता है, मसीह में हमें भी एक विरासत मिली है, आयत 11, क्योंकि हम उसकी योजना के अनुसार पूर्वनिर्धारित थे जो अपनी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार सब कुछ करता है। पॉल की शिक्षा स्पष्ट है।

परमेश्वर अपने प्रेम के आधार पर चुनता है, श्लोक 4। प्रेम में, उसने हमें गोद लेने के लिए पहले से ही नियत कर लिया है। परमेश्वर हमें अपनी इच्छा के उद्देश्य के आधार पर चुनता है। एक बार फिर, वही शब्द, उद्देश्य, जो हमें 2 तीमुथियुस 1:9 में मिलता है। प्रोथेसिस।

वास्तव में, पद 11 बाइबल में किसी भी पद जितना ही सशक्त है। उसमें, हमने एक विरासत प्राप्त की है, जिसे पहले से ही नियत किया गया है, और हम इसका भार उसके उद्देश्य के अनुसार उठाते हैं, जो अपनी इच्छा के अनुसार सभी चीजों को करता है। वाह! चुनाव परमेश्वर की इच्छा, उद्देश्य, योजना, सलाह के अनुसार होता है।

और यह प्रेम पर आधारित है। पुराने नियम के पूर्ववर्ती को दर्शाते हुए, परमेश्वर का उद्देश्य और प्रेम ही वह कारण था जिसके कारण उसने सभी राष्ट्रों में से इस्राएल को चुना। क्या परमेश्वर का ऐसा करना उचित है? परमेश्वर किसी भी राष्ट्र को चुनने के लिए बाध्य नहीं था।

इसके अलावा, आखिरकार, एक को चुनने में उसकी योजना दुनिया को मुक्ति दिलाने की थी। अब, इस्राएल को अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश बनना था, जो पहले से बेहतर था। और इसलिए, हमें पुराने नियम में केवल कुछ मिस्रियों के इस्राएल के साथ पलायन से बाहर आने के संकेत मिलते हैं।

योना का अनिच्छा से नीनवे जाना। यरीहो के विनाश के समय राहाब और उसके परिवार का होना। ऐसी ही बातों के संकेत हैं।

लेकिन यशायाह भविष्यवाणी करता है, और प्रेरितों के काम की पुस्तक मसीहा और उसके लोगों के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करती है कि वे राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनें। नए नियम में, यह नया इस्राएल, यीशु, और फिर उसके बारह शिष्य हैं, कोई संयोग नहीं, बारह, बारह जनजातियों की जगह लेते हैं, और ईसाई चर्च, नया इस्राएल, परमेश्वर का इस्राएल, गलातियों 6, सुसमाचार को पूरी दुनिया में लाते हैं। रोमियों 8 एक और महान चुनाव मार्ग है।

और मुझे इन महान अंशों के संदर्भ के साथ कुछ काम करने की ज़रूरत है, इससे पहले कि मैं लगातार पीछे जाऊँ और उनसे धर्मशास्त्र निकालूँ। रोमियों 8, 18 से 39, परमेश्वर द्वारा अपने संतों के संरक्षण के बारे में सबसे मज़बूत बाइबिल अंश है। हम संरक्षण या शाश्वत सुरक्षा के सिद्धांत के लिए इन व्याख्यानो में बाद में उस अंश पर जाएँगे।

अभी के लिए, हम रोमियों 8:28 से 30 तक देखना चाहते हैं। हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं। जो उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं।

क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में ज्येष्ठ ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी है। और जिन्हें उसने बुलाया है, उन्हें धर्मी भी ठहराया है।

जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी। 8:28 न्यायोचित रूप से प्रसिद्ध है। हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।

संदर्भ में सभी बातें वर्तमान परीक्षणों, पीड़ाओं और संघर्षों को दर्शाती हैं जो पहले की आयतों में हैं। आयत 18, मैं समझता हूँ कि वर्तमान समय की पीड़ाएँ उस महिमा के साथ तुलना करने लायक नहीं हैं जो हमारे सामने प्रकट होने वाली है। हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सभी चीजें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं।

उनके लिए जो उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं। 4, श्लोक 29, इस संयोजन के साथ शुरू होता है, *gar*, जो यहाँ कारण है। 29 और 30 कैसे प्रदर्शित करते हैं कि सभी चीजें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं? इसका उत्तर कुछ इस तरह है।

हमें पूरा भरोसा है कि परमेश्वर अपने लोगों की भलाई के लिए ही सब कुछ करता है, जो उससे प्रेम करते हैं क्योंकि उसने उनके लिए शुरू से लेकर अंत तक सबसे बड़ी भलाई की है। सुनम बोनम, सबसे बड़ी कल्पना की जा सकने वाली भलाई, उनका उद्धार।

और यहाँ विशेष रूप से, परमेश्वर अनिर्दिष्ट या अओरिस्ट काल में पाँच भूत काल क्रियाओं का रचयिता है। परमेश्वर ने पहले से जाना, पूर्वनिर्धारित किया, बुलाया, न्यायोचित ठहराया, और महिमा दी। परमेश्वर विषय है, रचयिता है।

इन पाँचों क्रियाओं का अर्थ है बचाया जाना। ओह, लेकिन उनके बीच कुछ बारीकियाँ हैं। निश्चित रूप से, पूर्वज्ञात महिमामंडित से अलग है।

हालाँकि वे सभी उद्धार की बात कर रहे हैं, लेकिन इन क्रियाओं का उद्देश्य क्या है? जिसे उसने पहले से जान लिया था, वह सब कुछ है। यह एक ही उद्देश्य है।

जिन्हें उसने पहले से जान लिया था, उन्हें उसने पहले से ही नियत भी कर दिया था। जिन्हें उसने पहले से ही नियत कर दिया था, उन्हें उसने बुलाया भी था। मैं उस साहित्यिक उपकरण को भूल गया जो इसके लिए नाम है।

जूड़ी गुंडी वोल्व, मिरोस्लाव वोल्व की पत्नी। *पॉल और दढ़ता*, दढ़ता पर एक आश्चर्यजनक अच्छी किताब। भाषा की इस विशेषता को उजागर करता है जहाँ यह पीछे जाता है और फिर आगे बढ़ता है।

इसी प्रकार, जिन्हें उसने पहले से नियत किया है वे पीछे चले जाते हैं। और जिन्हें उसने आगे बढ़ने के लिए बुलाया है, वे आगे बढ़ जाते हैं।

जिन लोगों को उन्होंने बुलाया वे वापस चले गए। ये भी एक कड़ी बनाते हैं। प्यूरिटन इसे स्वर्ण श्रृंखला कहते थे, और यह वास्तव में बहुत बुरा नहीं है।

यह बहुत करीब है। यह एक भाषण आकृति है जिसे चरमोत्कर्ष कहा जाता है। चरमोत्कर्ष, बस इतना ही।

ब्लास डी ब्रूनर और फंक, हम इसकी पुष्टि करेंगे। मानक ग्रीक व्याकरण, ब्लास डी ब्रूनर और फंक। चरमोत्कर्ष, यह पीछे जाता है और पकड़ता है और आगे बढ़ता है।

यह दर्शाता है कि जिस विषय के बारे में बात की जा रही है, उसकी निरंतरता क्या है। या जिस वस्तु के बारे में बात की जा रही है। यहाँ, परमेश्वर अपने लोगों को क्रियाएँ देता है।

परमेश्वर ने, न कि केवल क्रिया ने, अपने लोगों को क्रिया बनाया। परमेश्वर ने अपने लोगों को पहले से जाना, पूर्वनिर्धारित किया, बुलाया, न्यायोचित ठहराया, और महिमा दी। परमेश्वर प्रत्येक क्रिया का रचयिता है।

वे सभी भूतकाल में हैं। आश्चर्यजनक रूप से, महिमामंडित, जो निश्चित रूप से रोमनों के लिए भविष्य है जब उन्हें यह पत्र प्राप्त होता है, उसे भी भूतकाल में रखा गया है। जैसा कि मैंने कहा, यह सबसे मजबूत संरक्षण मार्ग है।

आप ऐसा क्यों कहते हैं? ऐसे प्रमाणों के कारण। लेकिन साथ ही, पूरा अंश संरक्षण पर एक सतत ध्यान है। इसलिए यह इतना शक्तिशाली है।

यह सिर्फ एक आयत नहीं है जो इसे सिखाती है, जो कि अच्छा होगा। पूरा अनुच्छेद चार अलग-अलग तर्कों का इस्तेमाल करता है। पहला तर्क है ईश्वर की योजना।

जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया था, उन्हें उसने पहले से ही नियत कर दिया था। उन्हें, क्षमा करें, उसने पहले से जान लिया था, उसने महिमा दी। उनकी महिमा इतनी निश्चित है कि परमेश्वर इसे अन्य क्रियाओं के साथ-साथ सरल भूतकाल में रख सकता है।

पूर्वज्ञान, क्या यह अर्मेनियाई धारणा के अनुरूप नहीं है, भगवान ने उनके विश्वास को पूर्वज्ञान किया था? नहीं, क्योंकि प्रत्येक क्रिया के लिए, विषय भगवान है, और भगवान के लोग वस्तु हैं। अर्थात्, अर्थगत संबंध ज्ञाता के रूप में भगवान और ज्ञात के रूप में उनके लोगों के बीच हैं। इसके लिए पृष्ठभूमि हमारा पाठ है, जहाँ भगवान कहते हैं कि उन्होंने पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों में से इस्राएल को जाना।

आमोस की एक अच्छी आयत मुझसे खो गई है। माफ़ करना। धरती पर जितने भी राष्ट्र हैं, उनमें से सिर्फ तुम्हें ही मैं जानता हूँ।

क्या परमेश्वर दूसरे को नहीं जानता था? हाँ, जानता था। बौद्धिक रूप से, अनुभूति के संदर्भ में, वह जानता था, लेकिन उसने अपना प्रेम उन सभी पर नहीं रखा। ओह, उसने सामान्य अनुग्रह के अर्थ में, उन्हें बारिश और धूप और आशीर्वाद और पारिवारिक जीवन का आशीर्वाद और इसी तरह की अन्य चीजें दीं।

लेकिन उसने उनके साथ वाचा नहीं बाँधी और उन्हें नहीं बचाया जैसा उसने इस्राएल के साथ किया था। इसलिए, यह परमेश्वर का अपने लोगों से प्रेम करना है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे। जिन लोगों से उसने प्रेम किया, उन्हें उसने पहले से ही नियत किया, उद्धार के लिए चुना।

जिन लोगों को उसने पहले से ही नियत किया था, उन्हें उसने बुलाया, उसने सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से प्रभावी ढंग से अपने पास बुलाया। जिन लोगों को उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने मसीह की धार्मिकता के आधार पर परमेश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में धर्मी घोषित किया। और जिन लोगों को उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा दी।

विश्वासियों का भविष्य का महिमामंडन जिसमें वे मसीह की महिमा को देखेंगे। वे इसमें भाग लेंगे और इससे बदल जाएंगे, रूपांतरित हो जाएंगे। क्या मैं समझ पाया कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ? मुश्किल से।

यह इतना अद्भुत है कि इसे पूरी तरह से समझना भी मुश्किल है। लेकिन हम परमेश्वर की महिमा को बिना नष्ट हुए देखेंगे। हम आने वाली महिमा में भाग लेंगे और हम महिमामय शरीर वाले महिमामय मनुष्य में बदल जाएंगे, जो परमेश्वर के सभी लोगों के साथ नई पृथ्वी पर अनंत जीवन के लिए उपयुक्त होंगे।

मैं रोमियों 9 पर चर्चा कर रहा हूँ। हमें इन अंशों और उनके संदर्भों के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है ताकि हम उनसे धर्मशास्त्र निकाल सकें। रोमियों 9 टेक्स्टस क्लासिकस है, चुनाव या पूर्वनियति के सिद्धांत के लिए शास्त्रीय पाठ।

रोमियों के लिए यह अवसर महत्वपूर्ण साबित हुआ। प्रेरितों के काम 2 के अनुसार, पिनोकेस्त के दिन तीर्थयात्रियों में रोम के यहूदी भी शामिल थे। उनमें से कई लोग बच भी गए, क्योंकि उन्होंने अपनी भाषा में अलौकिक रूप से सुसमाचार का प्रचार सुना और सुसमाचार को वापस ले आए।

शुरुआत में हर दूसरे ईसाई चर्च की तरह, यह निस्संदेह रोम में एक हिब्रू ईसाई चर्च था। हालांकि, समय के साथ, गैर-यहूदियों ने विश्वास किया और उनकी अपनी चर्च में यहूदियों की तुलना में उनकी संख्या अधिक हो गई। और रोमियों के अध्याय 14 के अनुसार, इससे परेशानी पैदा हुई।

पॉल वास्तव में यहूदी विश्वासियों को फटकार लगाता है। खैर, गैर-यहूदी और यहूदी विश्वासियों को फटकार लगानी है। गैर-यहूदी विश्वासी, खासकर इसलिए क्योंकि वह गैर-यहूदियों का प्रेरित है और गैर-यहूदी प्रबल हैं, और वे असावधान थे, यह उनके यहूदी भाइयों के लिए सही विशेषण है।

वे शुक्रवार की रात को अपने झींगा और वीनी रोस्ट का आनंद ले रहे थे, जिससे यहूदी ईसाईयों को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। पॉल कहते हैं, आप अपने झींगा और हॉट डॉग को जितना चाहें खा सकते हैं और बेकन भी खा सकते हैं, लेकिन अपने भाइयों के सामने ऐसा न करें, और शुक्रवार की रात को सार्वजनिक रूप से ऐसा न करें। इसे निजी तौर पर करें।

और वे सिर्फ रविवार को ही प्रभु की पूजा नहीं कर रहे थे। मेरा मतलब है, वे सिर्फ रविवार को ही प्रभु की पूजा कर रहे थे। उन्हें यहूदियों द्वारा यहूदी सब्त, नया चाँद और दूसरे यहूदी त्यौहार, फसह, इत्यादि मनाने का कोई सम्मान नहीं था।

पॉल कहते हैं कि गैर-यहूदियों को उन चीजों में भाग लेने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन उन्हें अपने यहूदी भाइयों के प्रति ज़्यादा सम्मान दिखाना चाहिए था, जो विडंबना यह है कि कमज़ोर भाई थे। इस प्रकार, हम बेहतर ढंग से समझते हैं कि क्यों, इस पुस्तक में, अध्याय 1, श्लोक 16 और 17 में विषयगत कथन से शुरू करते हुए, पॉल बार-बार यहूदी और यूनानी से कहता है कि पॉल चंगा करने की कोशिश कर रहा है। ओह, रोमियों के लिए उसके पास कई उद्देश्य हैं, और यह एक व्यवस्थित ग्रंथ बन जाता है, लेकिन यह एक संदर्भबद्ध व्यवस्थित ग्रंथ है।

ओह, यह रोम के चर्च से उसका परिचय है, जहाँ वह कभी नहीं गया था। यह उसकी इच्छा को दर्शाता है कि वह वहाँ आकर उनसे मिले। वह उन्हें एक आध्यात्मिक उपहार देना चाहता है।

उन्होंने अपने लेखन में कहीं भी व्यवस्थित रूप से कई महत्वपूर्ण ईसाई शिक्षाओं को प्रस्तुत किया है। लेकिन वह एक ऐसे चर्च को भी ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं जो जातीय आधार पर विभाजित है। श्लोक रोमियों 14: 10.

तुम अपने भाई पर दोष क्यों लगाते हो? तुम अपने भाई को क्यों तुच्छ समझते हो? इसलिए, 14:13, आइए हम अब एक दूसरे पर दोष न लगाएं, बल्कि यह तय करें कि हम कभी भी किसी भाई के मार्ग में कोई बाधा या रुकावट नहीं डालेंगे। आप फसल का पर्व नहीं मनाना चाहते। यह आपका अपना मामला है, लेकिन अपने चर्च में अपने यहूदी ईसाई भाइयों के सामने इस बारे में कोई समझौता न करें।

यह गलत है। आप उन पर ठोकर खा रहे हैं। और आप जब चाहें, जो चाहें खा सकते हैं।

यीशु ने सभी खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित किया। लेकिन अपने भाइयों को बदनाम मत करो। भोजन के लिए परमेश्वर के काम को नष्ट मत करो, आयत 20।

सब कुछ साफ है। और अगर यहूदी ईसाई अभी भी कोषेर कानून रखना चाहते हैं, तो यह उनका मामला है। लेकिन किसी के लिए यह गलत है कि वह अपने खाने से किसी दूसरे को ठोकर खिलाए।

अगर आपको ऐसा करना पड़ता है और आप दूसरे विश्वासियों के सामने ठोकर खाते हैं तो यह ईसाई स्वतंत्रता नहीं है। मुझे रोमियों 15:17 बहुत पसंद है। यह मेरे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है।

रोमियों 15:5 से 7. क्या मैंने 17 कहा? क्षमा करें, 5 से... धीरज का परमेश्वर, रोमियों 15:5, और प्रोत्साहन तुम्हें यह वरदान दे कि तुम रोम में यहूदियों और अन्यजातियों के साथ मसीह यीशु के अनुसार एक दूसरे के साथ ऐसे ही सद्भाव से रहो। ताकि तुम सब एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की महिमा करो। इसलिए, एक दूसरे का स्वागत करो जैसे मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिए तुम्हारा स्वागत किया है।

हो सकता है कि आपके पास मजबूत धार्मिक विश्वास हों। यह आपको स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि मेरे पास भी हैं। लेकिन उन विश्वासों में से एक चर्च की एकता का सिद्धांत है।

इफिसियों 4, एक चर्च है, और हमें उस एकता को बनाए रखना है। उन दृढ़ विश्वासों में से एक प्रेम का सिद्धांत है। विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए और एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए, रोमियों 15:7, जैसे मसीह ने हमें स्वीकार किया।

तो, हाँ, अपने मजबूत धार्मिक विश्वासों को उचित अनुपात में रखें। कुछ चीजें अन्य चीजों से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती हैं। और अगर मैं किसी साथी विश्वासी को संगति का दाहिना हाथ नहीं दे सकता, भले ही हम छोटी-छोटी बातों पर असहमत हों, भले ही हम कुछ ऐसी बातों पर असहमत हों जो मेरे दिल के करीब हैं लेकिन सुसमाचार और सबसे महत्वपूर्ण चीजें नहीं हैं, तो मेरे साथ कुछ गड़बड़ है, और मेरा सिद्धांत उतना शुद्ध नहीं है जितना मैं सोचना चाहता हूँ, क्योंकि बाइबल में प्रेम, संगति, शांति, अन्य विश्वासियों के साथ एकता आदि का सिद्धांत है।

हे भगवान, मैं कैल्विनवाद का बचाव करने वाली किताबें लिखता हूँ, लेकिन मेरा लक्ष्य उन लोगों के साथ व्यवहार करना है जिनसे मैं असहमत हूँ, जो प्रभु को जानते हैं, मसीह में साथी विश्वासियों के रूप में और उनके द्वारा प्यार किए जाने वाले। किसी भी मामले में, यहूदी ईसाई, पेंटेकोस्ट को छोड़कर, रोम वापस आए और समय के साथ एक हिब्रू ईसाई चर्च की स्थापना की। उन्हें श्रेय दें, उन्होंने गैर-यहूदी विश्वासियों को स्वीकार किया, और यह उनके लिए कठिन था क्योंकि इन लोगों के तरीके बहुत अलग थे।

मेरा मतलब है, वे बुतपरस्त थे। यह मुश्किल है। क्या आप देखते हैं कि वे लोग क्या खाते हैं? और इसी तरह की बातें।

वे हमारे जैसे नहीं दिखते। मेरा मतलब है, क्या हो रहा है? यह मुश्किल है। अरे, वे यीशु को जानते हैं। वे हमारा हिस्सा हैं। लेकिन समय के साथ, उनकी संख्या यहूदियों से ज़्यादा हो गई, इसलिए रोमियों 11 में, पॉल कह सकता था, मैं तुम गैर-यहूदियों को लिखता हूँ, यह मुख्य रूप से गैर-यहूदी ईसाई चर्च है, जिसमें कुछ यहूदी भी हैं।

जो उनका चर्च था वह अब चर्च बन गया है, और वे अल्पसंख्यक हैं, यहूदी। और इसलिए, क्या यहूदी ईसाइयों के पास कोई वैध विवाद है? एक वैध सवाल। सम्मानपूर्वक, वे भगवान से पूछते हैं, रोमियों 9 : 6 इसे दर्शाता है।

हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु, इस्राएल कभी ईश्वर के एकमात्र लोग थे। और हमने यीशु पर विश्वास किया है, और हम खुश हैं, लेकिन क्या इस्राएल के लिए ईश्वर का वचन विफल हो गया है? प्रभु, हम इसे सम्मानपूर्वक पूछते हैं। वैसे भी यह उनके दिलों में है।

और 9:1 से 5 में, पौलुस जातीय इस्राएली होने के महान आशीर्वाद का जश्न मनाता है। पद 5, उनके लिए, कुलपिताओं का है। परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को अन्यजातियों को नहीं दिया।

और उनकी जाति से, यहूदी जाति से, अब्राहम और सारा के रक्त वंशज, जितना चमत्कारी था, शरीर के अनुसार, मसीह, वादा किया गया व्यक्ति, मसीहा है, जिसका ईश्वर सब पर है, हमेशा के लिए धन्य है, आमीन। लेकिन ऐसा नहीं है कि ईश्वर का वचन विफल हो गया है। मैं इस संदर्भ को ऐतिहासिक रूप से स्थापित करने का प्रयास कर रहा हूँ क्योंकि यह महत्वपूर्ण है।

और यह हमें रोमियों 9, 10 और 11 को समझने में मदद करता है, जो कि बहुत सी बातों को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। मुझे उस सवाल का जवाब देना है। या मुझे पॉल की अभिव्यक्ति को समझाने दें।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर का वचन असफल हो गया है। क्योंकि वह तीन अलग-अलग उत्तर देता है, जो स्पष्टतः पूरक उत्तर हैं।

रोमियों 9, 10 और 11 में परमेश्वर का वचन यही है। संक्षेप में, परमेश्वर का वचन विफल नहीं हुआ है, रोमियों 9। परमेश्वर ने उन यहूदियों को बचाया जिन्हें उसने संप्रभुता से बचाने के लिए चुना था। खैर, यह मानवीय जिम्मेदारी को खत्म कर देता है, है न? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम क्या करते हैं, है न? गलत।

अध्याय 10. परमेश्वर का वचन विफल नहीं हुआ। अविश्वासी इस्राएल को ठीक वही मिला जो उसके अविश्वास के कारण उसे मिलना चाहिए था।

प्रभु यीशु मसीह को अस्वीकार करने के लिए परमेश्वर उन्हें उचित रूप से उत्तरदायी ठहराता है। वाह। वाह।

क्या आपका मतलब है कि ये सत्य किसी तरह से पूरक हैं? हाँ। क्या उनमें कोई क्रम नहीं है? हाँ, उनमें एक क्रम है। ईश्वर ईश्वर है।

भगवान पहले हैं। लेकिन भगवान की पूर्ण संप्रभुता पहले नहीं है। हे भगवान।

यह पूर्ण संप्रभुता से अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकता। क्या निर्माता को यह अधिकार नहीं है कि वह जो चाहे वह बर्तन बनाए? तुम कौन होते हो भगवान को जवाब देने वाले, बूढ़े आदमी? वाह। अच्छा भगवान।

यह बहुत मजबूत है। लेकिन यह वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी को कम नहीं करता है। जैसा कि जॉन फ्रेम ने अपनी उत्कृष्ट व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तक में हमें याद दिलाया है, जाहिर है, बाइबिल के अनुसार, जवाबदेही और जिम्मेदारी हमेशा योग्यता को शामिल नहीं करती है।

यह वह पुस्तक है जिसमें पॉल मूल पाप के बारे में सिखाता है। आदम के मूल पाप में दुनिया को दोषी ठहराया गया है, रोमियों 5, 12 से 19। यह वह पुस्तक है जिसमें पॉल, अनुग्रह और संप्रभुता और पूर्वनियति में जाने से पहले, अच्छा दुख, यहाँ अध्याय 9, 1:18 से 3:20 में वापस आता है।

संसार अपने पापों के कारण परमेश्वर के सामने घुटनों के बल पर आ जाता है। परमेश्वर का वचन विफल नहीं हुआ, रोमियों 9। परमेश्वर ने प्रभुतापूर्वक चुना कि वह किसे बचाना चाहता है, यहूदी और गैर-यहूदी। परमेश्वर का वचन विफल नहीं हुआ, अध्याय 9। अविश्वासी इस्राएल को ठीक वही मिला जो वह अपने अविश्वास के कारण पाने का हकदार था।

परमेश्वर का वचन विफल नहीं हुआ, अध्याय 11. परमेश्वर ने जातीय इस्राएल के साथ अभी तक काम पूरा नहीं किया है। क्योंकि परमेश्वर के उपहार और बुलावा अपरिवर्तनीय हैं, इसलिए वह उन्हें वापस नहीं लेता है।

ओह, यह समस्याग्रस्त है। यह समस्याग्रस्त है। क्योंकि इस्राएल, पहली सदी का इस्राएल, परमेश्वर के साथ एक असामान्य संबंध में खड़ा है, रोमियों 11: 28।

सुसमाचार के सम्बन्ध में, इस्राएली तुम अन्यजातियों के कारण परमेश्वर के शत्रु हैं, जिनके पास सुसमाचार पहुँचा है। जहाँ तक चुनाव का सम्बन्ध है, वे प्रिय हैं। अरे, अरे, अरे, एक क्षण रुको।

वे शत्रु हैं, और वे प्रिय भी हैं? बिल्कुल। रोमियों 11:28. जहाँ तक सुसमाचार का सवाल है, हे अन्यजातियों, यहूदी तुम्हारे कारण शत्रु हैं।

चुनाव के मामले में, वे अपने पूर्वजों की वजह से प्रिय हैं। क्योंकि, एक और व्याख्यात्मक बात यह है कि ईश्वर के उपहार और बुलावा अपरिवर्तनीय हैं। क्या यह इस्राएल राष्ट्र के भविष्य की गारंटी देता है? अच्छे लोग असहमत हैं।

मुझे नहीं लगता कि ऐसा होना ज़रूरी है। मुझे लगता है कि यह गारंटी देता है कि परमेश्वर बहुत से इस्राएलियों को बचाएगा, शरीर के अनुसार। इस्राएल का मतलब वही है जो रोमियों 9-11 में है।

अब्राहम और सारा के रक्त वंशज। जातीय इस्राएली। तो, क्या इस्राएल का अभी भी कोई भविष्य है? मुझे ऐसा लगता है।

और एक अन्य सौदे से, परलोक विद्या के क्षेत्र से, मेरा एक निष्कर्ष यह है कि अंतिम चीजों का हर प्रमुख विषय पहले से ही है और अभी तक नहीं है। यह अभी आंशिक रूप से पूरा हो चुका है, और अंत में पूरी तरह से पूरा हो जाएगा। अंत की ओर।

अन्तिम समय, दूसरे आगमन और आस-पास की घटना, और समवर्ती घटनाओं के समय। यह इस पर कैसे लागू होता है, और इसलिए सभी इस्राएल बचाए जाएँगे? रोमियों 11:26 में, सभी इस्राएल बचाए जाएँगे।

यह इस प्रकार लागू होता है। मेरी समझ यह है कि पूरा इस्राएल बच जाएगा। मुझे इसे संदर्भ में समझना चाहिए।

11:25 हे भाईयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इस रहस्य से अनजान रहो। इस्राएल पर आंशिक कठोरता तब तक रहेगी जब तक कि अन्यजाति पूरी तरह से प्रवेश न कर लें।

और इस तरह, सारा इस्राएल बच जाएगा। मैं इसे जातीय इस्राएलियों, अब्राहम और सारा के वंशजों के रूप में लेता हूँ। और यह हर दूसरे प्रमुख युगांतशास्त्रीय विषय की तरह है, पहले से ही और अभी तक नहीं।

इसका मतलब है कि मसीह के आने के बीच यहूदियों को बचाया जा रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि मसीह के लौटने के समय के आसपास यहूदी विश्वासियों की एक बड़ी फसल होगी। आखिरी, आखिरी दिन, अगर आप चाहें तो।

तो, संक्षेप में, इससे पहले कि हम चुनाव के सिद्धांत पर वापस लौटें, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। रोमियों 9, 10 और 11 में भी यही समस्या है। क्या इस्राएल के लिए परमेश्वर के वादे किनारे पर गिर गए हैं? बिलकुल नहीं।

यह स्वयं प्रभु परमेश्वर पर बुरा प्रभाव डालेगा। नहीं, परमेश्वर के वादे विफल नहीं हुए हैं। और दिव्य कुम्हार ने ठीक उन्हीं को बचाया है जिन्हें उसने बचाना चुना था।

खास तौर पर यहूदियों के बीच, लेकिन गैर-यहूदियों के बीच भी। अध्याय 9 के अनुसार। नहीं, परमेश्वर के वादे विफल नहीं हुए हैं। और ठीक वैसे ही जैसे पुराने नियम की पूरी कहानी में, यीशु और सुसमाचारों में, और प्रेरितों के काम की पुस्तक में।

यहाँ, इस्राएल को अपने अविश्वास के कारण वह सब मिलता है जिसके वह हकदार है। उसने धार्मिकता का अनुसरण किया। लेकिन उसने यह विश्वास से नहीं, बल्कि व्यवस्था से किया।

और मसीह हर उस व्यक्ति के लिए धार्मिकता के लिए एक व्यवस्था का अंत है जो विश्वास करता है। लेकिन इस्राएल में परमेश्वर के लिए जोश था, लेकिन ज्ञान के अनुसार नहीं। और कुल मिलाकर, उन्होंने अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया।

और उन्होंने उस अविश्वास के लिए जो बोया था, वही काटा। भगवान उन्हें जिम्मेदार ठहराते हैं। यहाँ धार्मिक संगतिवाद है।

पूर्ण ईश्वरीय संप्रभुता, रोमियों 9. वास्तविक मानवीय जिम्मेदारी, रोमियों 10. ये दोनों सत्य हैं। एक व्यवस्था है।

ईश्वर पहले हैं। हमारी जिम्मेदारी दूसरी है। और मैं उन्हें तनाव में रखता हूँ क्योंकि बाइबल इसी तरह से ऐसा करती है।

क्या परमेश्वर ने इस्राएल से जो वादा किया था वह विफल हो गया है? नहीं। अध्याय 11। अब वह उन इस्राएलियों को बचा रहा है जो विश्वास करते हैं।

और वह ऐसा करेगा क्योंकि उसके उपहार और उसका आह्वान अपरिवर्तनीय हैं। वह उनसे पीछे नहीं हटता।

वह अभी भी कई इस्राएलियों को उद्धार की ओर ले जाएगा। इस ढांचे के भीतर, अध्याय 9 में, मुझे विचार के प्रवाह के साथ थोड़ा काम करना चाहिए क्योंकि यह शक्तिशाली है।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर का वचन विफल हो गया है, 9:6। क्योंकि जो लोग इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्राएल के नहीं हैं। वे सभी अब्राहम की संतान नहीं हैं क्योंकि वे उसकी संतान हैं।

लेकिन इसहाक के द्वारा तुम्हारे वंश का नाम रखा जाएगा। इसका मतलब यह है कि शरीर के बच्चे परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं, बल्कि वादे के बच्चे संतान के रूप में गिने जाते हैं। अहा! क्या यह आर्मीनियाई प्रणाली के अनुकूल नहीं है? परमेश्वर वादे को पहले से ही देख लेता है।

कभी-कभी, नए नियम में वचन का अर्थ सुसमाचार होता है, है न? ठीक है। तो, क्या यहाँ यह कहा जा रहा है कि परमेश्वर ने वचन दिया, और परमेश्वर पहले से ही जानता है कि कौन वचन पर विश्वास करता है, और वह उन्हें चुनता है? नहीं। अगली पंक्ति दर्शाती है कि वचन से उसका क्या मतलब है।

यह वादा है। अगले साल इसी समय के बारे में वादा यही कहता है। मैं वापस आऊंगा, और सारा को एक बेटा होगा। वादा एक दिव्य आदेश है।

भगवान का वचन जो सारा के भगवान पर हंसने के बावजूद सच साबित हुआ। ओह, भगवान ने आखिरी शब्द सुना और बच्चे का नाम यित्ज़ाक रखा। वह हंसा।

भगवान दयालु है, है न? इसलिए इतना ही नहीं, बल्कि जब रेबेका ने एक आदमी, हमारे पूर्वज इसहाक से बच्चों को गर्भ धारण किया था, हालांकि वे अभी तक पैदा नहीं हुए थे या कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं किया था, ताकि भगवान के चुनाव का वादा जारी रहे, कामों के कारण नहीं, बल्कि उसके कारण जो बुलाता है, उसे बताया गया था, बड़ा छोटे की सेवा करेगा। जैसा कि लिखा है, याकूब, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इसलिए मैं इससे नफरत करता हूँ। पॉल जो कर रहा है वह छुटकारे के इतिहास में महत्वपूर्ण पहलुओं की एक संक्षिप्त समीक्षा दे रहा है, और उसका कहना है कि भगवान संप्रभुता से अपनी इच्छानुसार कार्य करता है।

इस्राएल से किया गया उसका वादा विफल नहीं हुआ। उसने एक ऐसे जोड़े को लिया जो बच्चे पैदा करने के मामले में लगभग मर चुका था, और उनसे उसने इसहाक को जन्म दिया। परमेश्वर के संप्रभु वादे को उसने संप्रभुतापूर्वक पूरा किया।

इसके अलावा, अगली पीढ़ी में, याकूब और इसहाक के जन्म से पहले, परमेश्वर ने संप्रभुता से कहा, मैं इसे चुनूंगा और उसे नहीं। विशेष रूप से, पॉल कहते हैं, ताकि चुनाव में परमेश्वर का उद्देश्य कायम रहे। पॉल मानवीय आपत्तियों का अनुमान लगाता है।

श्लोक 14, तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के साथ अन्याय है? वह कैसे एक को चुन सकता है और दूसरे को जन्म से पहले नहीं? उत्तर : बिल्कुल नहीं। आप ईश्वरीय विशेषाधिकार को नहीं समझते। यह पहले से ही निर्गमन की पुस्तक में है, क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस पर दया करना चाहूँगा, उस पर दया करूँगा और जिस पर दया करना चाहूँगा, उस पर दया करूँगा।

यह दिखाने के लिए एक जगह है। मैं अपने बत्तखों को पंक्ति में लाने जा रहा हूँ। रोमियों 9, रोमियों 9, 15।

हाँ, सर्वनाम एकवचन हैं। यहाँ एक उदाहरण दिया गया है। माना कि बाइबल के ज्यादातर पाठक चर्च हैं, इसलिए चुनाव बहुवचन है।

लेकिन यहाँ, मैं जिस पर दया करना चाहूँगा, उस पर दया करूँगा और जिस पर दया करना चाहूँगा, उस पर दया करूँगा। ये एकवचन सर्वनाम हैं। Whos , शब्द Whom हर बार एकवचन है।

तो फिर, यह मानवीय इच्छा या परिश्रम पर निर्भर नहीं करता, बल्कि ईश्वर पर निर्भर करता है जो दयालु है। विशेष रूप से, मानवीय इच्छा को खारिज कर दिया जाता है। मैंने सोचा कि ईश्वर ने हमें अपनी इच्छा का उपयोग करके उसके विश्वास पर आधारित चुना है, नहीं, नहीं, नहीं।

मोक्ष मानव इच्छा या मानव परिश्रम पर निर्भर नहीं है। वस्तुतः, यह नहीं है। इसलिए, यह न तो इच्छा करने वाले का है, न ही भागने वाले का, बल्कि दया दिखाने वाले ईश्वर का है, बल्कि दया दिखाने वाले ईश्वर का है। इच्छा करना काफी स्पष्ट है।

यह मानवीय इच्छाशक्ति का नहीं है, मानवीय कार्य का नहीं है, मानवीय इच्छाशक्ति का प्रयोग है। जो दौड़ता है, वह परिश्रम के लिए एक रूपक है। मैं 73 साल का हूँ। मैं जॉगिंग करता था। मैं दौड़ता था। मैं जॉगिंग करता था। अब मैं चलता हूँ। मैं इसे तेज़ कहता हूँ। आप इसे तेज़ नहीं कह सकते।

अगर आप युवा हैं, तो मुझे लगता है कि आप में से कई युवा हैं। लेकिन अंदाज़ा लगाइए? मुझे यह बहुत पसंद है। यह अच्छा लगता है।

यह मुझे आगे बढ़ने में मदद करता है। और फिर भी, यह एक तरह का परिश्रम है, कम से कम इस बुजुर्ग व्यक्ति के लिए। यह बात स्पष्ट है कि यह उस व्यक्ति के लिए नहीं है जो इच्छा रखता है।

उद्धार का मामला मानवीय इच्छा या मानवीय दौड़-भाग का नहीं है, अर्थात् मानवीय ऊर्जा का प्रदर्शन, प्रयोग, स्वयं को खपाना, बल्कि उद्धार परमेश्वर का है जो दया दिखाता है क्योंकि हमें इसकी आवश्यकता है। फिर पौलुस छुटकारे के इतिहास में एक और दृष्टांत की ओर बढ़ता है, जहाँ फिरौन और इस्राएली बंधन में हैं। प्रभु फिरौन से कहते हैं, इसी उद्देश्य से मैंने तुझे खड़ा किया है, कि मैं तुझ में अपनी शक्ति दिखाऊँ और मेरा नाम सारी पृथ्वी पर घोषित हो।

तो फिर, भगवान किस पर दया करते हैं? मुझे यकीन है कि यह अभी भी एकवचन है, लेकिन मैंने कभी-कभी गलतियाँ की हैं, और मैं ऐसा नहीं करना चाहता। श्लोक 18 है। फिर से एकवचन।

किसको और किसको ? जिस पर चाहता है दया करता है और जिस पर चाहता है कठोर बना देता है। कभी-कभी चुनाव व्यक्तियों का होता है।

भगवान दयालु हैं। वास्तव में, यहाँ एक प्रगति है। ऊपर से यह था कि वह जिस किसी के लिए भी दया और करुणा रखते थे।

अब यह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है। वह जिस पर चाहता है दया करता है और जिस पर चाहता है उसे कठोर बनाता है। यहाँ जोर मानवीय इच्छा पर नहीं है, विशेष रूप से इस बात से इनकार करते हुए कि यह एक इंसान है जो इच्छा करता है, बल्कि यह ईश्वरीय विशेषाधिकार पर है।

भगवान भगवान हैं। इस संदर्भ में भगवान बचाते हैं। और फिर, व्यवस्थित शक्ति यह है कि यह किसी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करती है।

यह अपनी कमज़ोरियों पर ध्यान केंद्रित करता है। आप रोमियों 9 से इतनी आसानी से एक अति-कैल्विनिस्ट हो सकते हैं। ऐसा मत करो! यह एक ऐसी किताब के बीच में है जो सुसमाचार की प्रशंसा करती है। अच्छा दुख।

रोमियों 1:16, 17 का पूरा उद्देश्य यह है कि पुस्तक का विषय सुसमाचार है। रोमियों 10, जो कोई प्रभु में विश्वास करेगा वह उद्धार पाएगा - रोमियों 10 में सुसमाचार, प्रचार की आवश्यकता, इत्यादि पर एक विस्तृत अंश।

इसलिए अति-कैल्विनिस्ट मत बनो। कृपया, बस एक संतुलित कैल्विनिस्ट बनो। बस इतना ही।

तो, और फिर से, मुझे श्लोक 14 और 19 दोनों ही पसंद हैं। वे मुझे दिखाते हैं कि मेरा पढ़ना मूल रूप से सही है क्योंकि यह इन आपत्तियों को सामने लाता है। परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है, और जिस पर चाहता है उसे कठोर बनाता है।

एक पल रुको! वाह! तुम्हारा मतलब है, क्या उसका मतलब यही है? इस पढ़ने में आपत्ति बिल्कुल सही है। फिर तुम मुझसे पूछोगे कि वह अभी भी दोष क्यों ढूँढ़ता है। उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? यह एक सुंदर आपत्ति है, जो दिखाती है कि हमने इसे सही ढंग से समझा है। यह श्लोक इन मामलों में ईश्वरीय विशेषाधिकार को दृढ़ता से रेखांकित करता है।

हे मनुष्य, तू कौन है जो परमेश्वर को उत्तर दे? पॉल कहता है, बैठ जा और चुप हो जा। तुझे अधिकार नहीं है... ओह, अगर मैं परमेश्वर होता, तो मैं... बेटा, जब कोई ऐसा कहता है तो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। ओह, हम खुद को क्या समझते हैं? निश्चित रूप से, हमें अपनी जगह पर रखा जाना चाहिए।

हम भगवान को यह नहीं बताते कि उसे क्या करना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अगर हम होते तो क्या करते... हे भगवान। हम प्राणी हैं, पतित प्राणी।

अगर हम बच गए हैं, तो यह भगवान की कृपा से है। क्या जो चीज़ गढ़ी गई है, वह अपने गढ़ने वाले से कहेगी, तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया? क्या कुम्हार का कोई अधिकार नहीं है? वह ऐसे अलंकारिक प्रश्नों का उपयोग करता रहता है। उत्तरों के बारे में कोई संदेह नहीं है।

वह सकारात्मक उत्तरों को इंगित करते हुए ग्रीक कणों का उपयोग करता है। क्या कुम्हार को मिट्टी पर कोई अधिकार नहीं है कि वह एक ही गांठ से एक बर्तन को सम्मान के लिए और दूसरे को अपमानजनक उपयोग के लिए बनाए? वह ऐसा करता है, है न, नकारात्मक कण में निहित है। इसलिए, परमेश्वर ने अब्राहम और सारा, याकूब और एसाव के साथ अपनी इच्छा को संप्रभुतापूर्वक दिखाया।

परमेश्वर ने फिरौन और इस्राएलियों के साथ अपनी इच्छा को सर्वोच्चता से दिखाया। परमेश्वर ने सर्वोच्चता से दिखाया... अब हम वास्तव में मूल-तत्व पर आते हैं। ओह, वह परमेश्वर और चुनाव के उद्देश्य को बनाए रखने के लिए पहले भी इसके बारे में बात कर रहा था।

लेकिन अब, स्पष्ट रूप से, स्पष्ट रूप से। क्या होगा यदि परमेश्वर, अपने क्रोध को दिखाने और अपनी शक्ति को प्रकट करने की इच्छा रखते हुए, विनाश के लिए तैयार किए गए क्रोध के पात्रों को बहुत धैर्य के साथ सहन करता है ताकि दया के पात्रों के लिए अपनी महिमा के धन को प्रकट कर सके, जिन्हें उसने महिमा के लिए पहले से तैयार किया है? वाह। ओह, यह सिर्फ काल्पनिक है।

यह सिर्फ इतना कहता है, अगर उसने ऐसा किया तो क्या होगा? खैर, यह फिर से एक आलंकारिक प्रश्न है। और यह काल्पनिक नहीं है, जैसा कि श्लोक 24 से पता चलता है। दया के पात्रों के कारण, वह पहली सदी के मनुष्यों के साथ अपनी पहचान बनाता है।

हम भी, जो दया के पात्र हैं, महिमा के लिए पहले से तैयार किए गए हैं - हम भी जिन्हें उसने बुलाया है, न केवल यहूदियों में से, बल्कि अन्यजातियों में से भी। यहाँ, पौलुस चुनाव या पूर्वनियति को बुलावे से जोड़ता है।

जिन्हें परमेश्वर ने चुना, उन्हें उसने सुसमाचार के माध्यम से अपने पास बुलाया। यह उन कई स्थानों में से एक है जिसे हम बुलावे का अध्ययन करते समय देखेंगे। हम शायद इसे तब भी देखेंगे जब हम चुनाव का अध्ययन करते रहेंगे।

जहाँ परमेश्वर अपने चयन और अपने आकर्षण दोनों को जोड़ता है, यह जॉन का लोगों को अपने पास बुलाने के बारे में बात करने का तरीका है। मेरे दोस्तों, चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं, परमेश्वर, दिव्य कुम्हार के पास क्रोध के बर्तन और दया के बर्तन हैं।

क्या कोई... क्या हर इंसान के भाग्य के पीछे भगवान का हाथ है? मेरा जवाब किसी ऐसे दर्शन पर आधारित नहीं है जिसे मैं अपनाना चाहता हूँ। लेकिन भगवान के रहस्योद्घाटन पर आधारित है। सिर्फ यहीं नहीं, बल्कि एक और... यूहन्ना 10, 1 पतरस 2 याद आते हैं।

हम इसे बाद में देखेंगे। मेरा जवाब हाँ है। वह स्वर्ग जाने वाले लोगों के पीछे खड़ा है।

हाँ। वह नरक में जाने वाले लोगों के साथ खड़ा है। हाँ।

क्रोध के पात्र हैं जो विनाश के लिए पहले से तैयार हैं। दया के पात्र हैं जो महिमा के लिए पहले से तैयार हैं। क्या वह अंततः उन दोनों के पीछे खड़ा है? हाँ।

आखिरकार, क्या वह उनके पीछे समान रूप से खड़ा है? मेरा जवाब है नहीं। और मैं व्याकरण की अपील करूँगा। दया के बर्तन उसने पहले से तैयार कर रखे हैं।

सक्रिय आवाज़। विनाश के लिए तैयार किए गए क्रोध के बर्तन। यह निष्क्रिय है।

क्या मैं इस बात से इनकार कर रहा हूँ कि परमेश्वर चुनाव और निंदा दोनों करता है? मैं नहीं कर रहा हूँ। क्या मैं यह कह रहा हूँ कि आखिरकार हर किसी के भाग्य के बारे में बाइबल का कथन यही है... हाँ। क्या वे समान हैं? समान रूप से परम? हाँ।

क्या वे बराबर हैं? नहीं। इस व्याख्यान को समाप्त करने से पहले मैं इन बातों का अपना अर्थ यहाँ दे रहा हूँ। अगर आप मुझसे पूछें कि कोई क्यों बचाया जाता है, तो मैं कहूँगा कि सबसे तात्कालिक... मैं तात्कालिक से लेकर अंतिम तक जाता हूँ, और ये सभी उत्तर बाइबल से लिए गए हैं और सत्य हैं।

कोई व्यक्ति इसलिए बचा है क्योंकि उसने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है। सच? हाँ। परम? नहीं।

उन्होंने मसीह पर विश्वास किया क्योंकि पवित्र आत्मा ने उनके दिलों को खोल दिया था। क्या इससे उनका विश्वास खत्म हो जाता है? नहीं। यह वास्तव में उनके विश्वास को स्थापित करता है और सक्षम बनाता है।

क्या यही अंतिम उत्तर है? नहीं। मसीह उन लोगों को बचाने के लिए मरा और जी उठा। क्या इससे पवित्र आत्मा का प्रभाव समाप्त हो जाता है? नहीं।

पवित्र आत्मा... जब लोग सुसमाचार सुनते हैं तो वह उन्हें प्रकाशित करता है। क्या यह उनके विश्वास को प्रकाशित करता है? नहीं। वे मानते हैं कि यीशु मरा और फिर से जी उठा।

वे इसलिए बचाए गए क्योंकि उन्होंने विश्वास किया। क्योंकि पवित्र आत्मा ने काम किया। क्योंकि यीशु ने काम किया।

अंततः, हमारे लिए पूरी तरह से समझ में न आने वाले तरीकों से, वे बचाए गए क्योंकि वे परमेश्वर की दया के पात्र थे, जिन्हें उसने दुनिया के निर्माण से पहले महिमा के लिए पहले से तैयार किया था। क्या यह यीशु ने जो किया उसे नकारता है? क्या तुम मजाक कर रहे हो? यीशु पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आया था। क्या यह आत्मा ने जो किया उसे नकारता है? क्या तुम मजाक कर रहे हो? त्रिएकता सामंजस्य में काम करती है।

क्या यह चुनाव हमारे विश्वास को एक कल्पना बना देता है? नहीं, यह हमारे विश्वास को एक कल्पना नहीं बनाता। और जब भगवान ने मुझे 21 साल की उम्र में बचाया, तो मुझे पता था कि यह सब उनकी कृपा थी। हाँ, मैं वास्तव में उन पर विश्वास करता था।

और उसने मेरी ज़िंदगी को हमेशा के लिए बदल दिया। लेकिन मुझे पता था... मुझे यह सब समझ में नहीं आया। लेकिन मुझे पता था कि उसने आखिरकार मुझे ही चुना है।

मैं यह नहीं समझा सका कि क्यों। चलो दूसरी तरफ चलते हैं। लोग खो गए हैं।

क्यों? इसका तत्काल उत्तर है... उनके पापों के लिए। यदि आप नरक के अंशों का अध्ययन करते हैं और मुझ पर विश्वास करते हैं, तो मैंने ऐसा किया है। परीक्षण के दौरान मेरे नरक और आग के नीचे नरक की तुलना करें।

मैं बस यहीं रुकता हूँ। नरक के दो दृश्य। बस इतना ही काफी है।

दुर्भाग्यवश या सौभाग्यवश मैंने इससे कहीं ज़्यादा किया है। मैंने उन अंशों का अध्ययन किया है। लोग अपने पापों के कारण नरक में जाते हैं।

क्या यही अंतिम बाइबिल है... हाँ, उन्हें बचाए जाने के लिए सुसमाचार पर विश्वास करना होगा। लेकिन वे सुसमाचार पर विश्वास न करने के कारण नरक में नहीं जाते। वे नरक में जाते हैं, चाहे उन्होंने सुसमाचार सुना हो या नहीं, अपने पापों के कारण।

हर नरक मार्ग में यही कहा गया है। पापपूर्ण विचार, शब्द और कर्म। क्या यह बाइबल का अंतिम कथन है? नहीं।

बाइबल रोमियों 5:12-19 में आदम के मूल पाप के बारे में सबसे स्पष्ट रूप से बताती है। क्या आदम का मूल पाप मेरे वास्तविक पापों को, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं, निरस्त कर देता है? पॉल के अनुसार ऐसा नहीं है।

रोमियों 1-18-3-20 में, वह अध्याय 5 में मूल पाप पर आने से पहले, वास्तविक पापों पर एक लंबा शोध प्रबंध देता है। ओह, चलो! मूल पाप के बिना कोई वास्तविक पाप नहीं होगा, है न? सही है। क्या एक दूसरे को खारिज नहीं करता है? प्रेरित के अनुसार नहीं। भगवान के अनुसार नहीं।

मेरे लिए यह काफी है। मैंने कभी नहीं कहा कि धर्मशास्त्र रहस्यमय नहीं है, कि हमारे पास सभी उत्तर हैं। हमारा काम यह समझने की कोशिश करना है कि भगवान ने क्या कहा है, जितना हम कर सकते हैं।

नम्र भावना के साथ, यह स्वीकार करते हुए कि हम सब कुछ नहीं जानते। कोई अपने पापों के कारण खो गया है। कोई आदम के पाप के कारण खो गया है।

अंततः, लोग खो जाते हैं क्योंकि वे क्रोध के पात्र हैं जिन्हें एक संप्रभु कुम्हार द्वारा विनाश के लिए तैयार किया गया है। वाह ! क्या यह सच है? हाँ। क्या यह सृष्टि से पहले था? हाँ।

क्या यह उद्धार के लिए लोगों को चुनने के समान है? नहीं, क्योंकि वह उद्धार के लिए लोगों को चुनने में सक्रिय है। अगर उसने हमें नहीं चुना होता, तो हम कभी विश्वास नहीं करते। खोए हुए लोगों के मामले में, उसे बस उन्हें छोड़ देना है।

क्या यह उनका फैसला नहीं है? हाँ, यह समझ से परे है। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूँ।

यह उसकी अपनी पवित्रता और न्याय के अनुसार है। क्या वह सबके लिए ऐसा नहीं कर सकता था? हाँ। क्या उसे इस तथ्य का एहसास नहीं था? क्या उसे सभी को बचाने का अधिकार नहीं था? नहीं।

लेकिन उसने बहुतों को छोड़ दिया, और यही उनकी निंदा का अंतिम आधार है। क्या यह आदम के पतन को निष्प्रभावी कर देता है? उत्पत्ति 3 के अनुसार नहीं। पुराने नियम के बाकी हिस्सों के अनुसार नहीं। रोमियों 5 और नए नियम के बाकी हिस्सों के अनुसार नहीं।

क्या इनमें से कोई भी बात लोगों के अविश्वास को खत्म कर देती है? नरक के उन दस प्रसिद्ध अंशों का अध्ययन करें जो अनंत दंड की शिक्षा देते हैं। अगर मैं बाइबल में एक बात जानता हूँ, तो मैं यह जानता हूँ। यह इस तथ्य को खत्म नहीं करता कि मनुष्य अपने पापों के कारण नरक में जाएगा।

अगली बार, हमारे अगले व्याख्यान में, हम इसे उठाएँगे और जारी रखेंगे। इन महान ग्रंथों का सर्वेक्षण करने के बाद, हम उन पर आधारित व्यवस्थित धर्मशास्त्र को उठाएँगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7, चुनाव व्यवस्थित सूत्रीकरण, संख्या 2 है।